दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम में दिसम्बर 2016 के उपरांत
प्रवेश प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों हेतु जानकारी
Information for Students who got Admission in
Distance Education Program AFTER December 2016

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

सत्रीय कार्य हेतु प्रश्न

प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम – स्वास्थ्य संरक्षण (कोड 05)

(i) प्रथम प्रश्नपत्र – स्वास्थ्य प्रबंधन (0501) पूर्णांक 20

सत्रीय कार्य हेतु प्रश्न – निम्नलिखित दसों प्रश्नों के उत्तर लिखने हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 250 शब्दों में देना है। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का है।

1. "आहार एवं विहार स्वास्थ्य रक्षक एवं रोग कारक हैं।" इस कथन की व्याख्या कीजिए।
2. "त्रयउपस्तंभ उत्तम स्वास्थ्य का आधार है।" इस कथन की व्याख्या कीजिए।
3. धातु क्या है? इसके प्रकार, उत्पत्ति व कार्यों का वर्णन करें।
4. दिनचर्या किस प्रकार की होनी चाहिए? समझाएँ।
5. सामाजिक दायित्व एवं सद्वृत्ति से आप क्या समझते हैं?
6. संस्कार क्या है, कितने प्रकार के होते हैं? इनमें से किसी एक संस्कार का वर्णन कीजिए।
7. योग एवं व्यायाम क्या हैं? इससे शरीर पर होने वाले लाभों का वर्णन करें।
8. प्रज्ञायोग व्यायाम कितने चरणों में पूरा होता है? वर्णन कीजिए।
9. महर्षि पतंजलि के अष्टांग योग से आप क्या समझते हैं?
10. पाचन संस्थान एवं उदर के विकारों को दूर करने के लिए उपयोगी आसनों का वर्णन कीजिए।

(ii) द्वितीय प्रश्नपत्र – शरीर रचना एवं वैकल्पिक उपचार विधियाँ (0502) पूर्णांक 20

सत्रीय कार्य हेतु प्रश्न – निम्नलिखित दसों प्रश्नों के उत्तर लिखने हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 250 शब्दों में देना है। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का है।

1. शरीर की परिभाषा क्या है? शरीर के संगठन में कार्बोहाइड्रेट का क्या महत्त्व है?
2. पाचन संस्थान व श्वसन संस्थान का सचित्र वर्णन करें।
3. धमनी व शिरा में अंतर लिखें।
4. रोग क्या है? दाँत में कीड़े लगने के क्या कारण हैं? उससे बचने के उपाय लिखें।
5. संक्रमण रोग से आप क्या समझते हैं? उदाहरण दीजिए।
6. आघात से ग्रस्त रोगी की चिकित्सा का विस्तृत वर्णन कीजिए।
7. यज्ञ क्या है? 'यज्ञोपैथी एक सशक्त वैकल्पिक उपचार पद्धति' – व्याख्या कीजिए।
8. 'यज्ञ मात्र धार्मिक कर्मकाण्ड नहीं' – इसे अपने शब्दों में लिखें।
9. प्राकृतिक चिकित्सा क्या है? इसके दस सिद्धांतों की व्याख्या कीजिए।
10. प्राण चिकित्सा किसे कहते हैं? इसकी प्रमुख विशेषताओं का वर्णन करें।

(iii) तृतीय प्रश्नपत्र – वानस्पतिक द्रव्यों का औषधीय उपयोग (0503) पूर्णांक 20

सत्रीय कार्य हेतु प्रश्न – निम्नलिखित दसों प्रश्नों के उत्तर लिखने हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 250 शब्दों में देना है। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का है।

1. द्रव्य किसे कहते हैं? इसके वर्गीकरण का वर्णन कीजिए।
2. रस एवं वीर्य किसे कहते हैं? प्रकार व उदाहरण लिखें।
3. पंचविध कषाय कल्पना किसे कहते हैं?
4. आसव व अरिष्ट में क्या अंतर है?
5. अनुपान को परिभाषित करते हुए चिकित्सा में इसके महत्त्व बताइए।
6. स्वास्थ्य संरक्षण में घरेलू मसालों की उपयोगिता पर निबन्ध लिखें।
7. ब्राह्मी एवं एरण्ड का सामान्य परिचय देते हुए चिकित्सा में उपयोग बताइए।
8. वासा एवं बिल्व का सामान्य परिचय देते हुए चिकित्सा में उपयोग बताइए।
9. भूम्यामलकी एवं अपामार्ग का सामान्य परिचय देते हुए चिकित्सा में उपयोग बताइए।
10. तुलसी एवं नीम का सामान्य परिचय देते हुए चिकित्सा में उपयोग बताइए।

सत्रीय कार्य हेतु नियम एवं निर्देश

- प्रत्येक सैद्धांतिक प्रश्नपत्र हेतु एक सत्रीय कार्य (Assignment) बना कर जमा करना होगा।
- सत्रीय कार्य के अंतर्गत हल किए जाने वाले प्रश्न वेबसाइट पर दिए जाएंगे। यह विद्यार्थियों की जिम्मेदारी होगी कि वे वेबसाइट से सत्रीय कार्यों के प्रश्नों को प्राप्त करें।
- प्रमाणपत्र पाठ्यक्रमों में प्रत्येक प्रश्नपत्र के सत्रीय कार्य में 10 प्रश्न होंगे। विद्यार्थी को इन दसों प्रश्नों के उत्तर लिखने होंगे। प्रत्येक उत्तर लगभग 250 शब्दों का होना चाहिए। समस्त प्रश्न समान अंकों के होंगे।
- स्नातकोत्तर डिप्लोमा योग विज्ञान पाठ्यक्रम में प्रत्येक प्रश्नपत्र के सत्रीय कार्य में 4 प्रश्न होंगे। विद्यार्थी को इन चारों प्रश्नों के उत्तर लिखने होंगे। प्रत्येक उत्तर लगभग 400 शब्दों का होना चाहिए। समस्त प्रश्न समान अंकों के होंगे।
- सत्रीय कार्य लिखने के लिए ए–4 साइज़ सादे सफेद कागजों का प्रयोग करना आवश्यक है।
- सत्रीय कार्य के ऊपर प्लास्टिक का फाइल कवर नहीं लगाना है।
- सत्रीय कार्य सिर्फ स्वलिखित (अपनी हस्तलिपि में) ही होना चाहिए। कम्प्यूटर द्वारा टाइप किया गया सत्रीय कार्य अथवा अन्य किसी प्रकार से तैयार किया गया सत्रीय कार्य निरस्त कर दिया जाएगा।
- यदि यह पाया जाता है कि सत्रीय कार्य में एक दूसरे की नकल की गई है तो ऐसे समस्त सत्रीय कार्य निरस्त कर दिए जाएंगे।
- विद्यार्थी प्रत्येक सौद्धांतिक प्रश्नपत्र के लिए एक सत्र में सिर्फ एक बार ही सत्रीय कार्य जमा कर सकता है। यदि विद्यार्थी एक से अधिक बार सत्रीय कार्य जमा करता है तो सबसे पहले जमा किया गया सत्रीय कार्य ही मान्य होगा।
- प्रत्येक प्रश्नपत्र का सत्रीय कार्य अलग से बना कर जमा करना होगा। यदि विभिन्न प्रश्नपत्रों के सत्रीय कार्यों के प्रश्नों के उत्तर एक–के–बाद–एक लगातार लिख दिए गए हैं, तो ऐसे सत्रीय कार्यों को निरस्त कर दिया जाएगा।
- प्रत्येक प्रश्नपत्र के सत्रीय कार्य के ऊपर फॉर्म क्रमांक 1 लगाना अनिवार्य है (यह फॉर्म वेबसाइट पर दिया गया है)। फॉर्म क्रमांक 1 में अन्य जानकारी के साथ–साथ उस प्रश्नपत्र का नाम एवं कोड भरे होने चाहिए जिसका यह सत्रीय कार्य है। फॉर्म क्रमांक 1 पर विद्यार्थी का वही हस्ताक्षर होना चाहिए जो उसने पाठ्यक्रम में प्रवेश के समय दिया था। यदि किसी सत्रीय कार्य के ऊपर फॉर्म क्रमांक 1 नहीं लगा होगा या उसमें वांछित समस्त जानकारी नहीं भरी गई होगी तो उस सत्रीय कार्य को निरस्त कर दिया जाएगा।
- सत्रीय कार्य को रजिस्टर्ड डाक द्वारा अथवा स्वयं आकर दूरस्थ शिक्षा केंद्र में जमा कराना होगा।
- प्रत्येक सत्र में सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि दूरस्थ शिक्षा केंद्र द्वारा निर्धारित की जाएगी एवं दूरस्थ शिक्षा केंद्र की वेबसाइट पर उपलब्ध कराई जाएगी। यह विद्यार्थियों की जिम्मेदारी है कि वे इस जानकारी को वेबसाइट से प्राप्त कर के अंतिम तिथि तक दूरस्थ शिक्षा केंद्र में सत्रीय कार्य जमा करें। अंतिम तिथि तक सत्रीय कार्य दूरस्थ शिक्षा केंद्र में जमा करना अनिवार्य है। अंतिम तिथि के उपरांत प्राप्त

सत्रीय कार्य निरस्त कर दिया जाएगा। अंतिम तिथि आगे बढ़ाने हेतु दिए गए किसी भी आवेदन पर विचार नहीं किया जाएगा। यदि कोई विद्यार्थी अंतिम तिथि आगे बढ़ाने हेतु अनावश्यक रूप से जोर देता है तो इसे अनुशासनहीनता माना जाएगा, एवं ऐसी स्थिति में विद्यार्थी पर अनुशासनात्मक कार्यवाही करने का अधिकार विश्वविद्यालय प्रशासन के पास सुरक्षित रहेगा।

- किसी सैद्धांतिक प्रश्नपत्र का सत्रीय कार्य जमा न करने की स्थिति में, उस सत्र में, विद्यार्थी को उस प्रश्नपत्र की सत्रांत परीक्षा में सम्मिलित होने की अनुमति नहीं दी जाएगी। इस संदर्भ में दिए गए किसी भी आवेदन पर विचार नहीं किया जाएगा। इस संबंध में छूट उसी स्थिति में होगी जब कि किसी पूर्व सत्र में उस प्रश्नपत्र का सत्रीय कार्य जमा किया जा चुका हो, एवं उस सत्र में उस सत्रीय कार्य में उत्तीर्ण होने हेतु वांछित 40% अंक प्राप्त कर लिए गए हों।
- सत्रीय कार्य के साथ एक A–5 साइज़ का लिफाफा जमा करना अनिवार्य है जिस पर विद्यार्थी का नाम एवं पूरा पता लिखा हुआ हो।
- प्रत्येक सैद्धांतिक प्रश्नपत्र हेतु सत्रीय कार्य 20 अंकों का निर्धारित किया गया है। यह उस प्रश्नपत्र के पूर्णांक (100 अंक) का 20% है।
- विद्यार्थी को प्रत्येक सत्रीय कार्य में उत्तीर्ण होने हेतु 40 प्रतिशत अंक (8 अंक) प्राप्त करना अनिवार्य है।